Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अक्टूबर/2023 ई

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

October/2023

Date of Publication:25-10-2023

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

7-10-2023 को क़ादियान में आयोजित लोकल वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह के अवसर पर मुक़ाबिला रस्सा कशी का एक दिलचस्प दृश्य।

30-7-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह बरहपुरा (ज़िला भागलपुर) बिहार के स्टेज का एक दृश्य

10-9-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला जलपाईगुड़ी (वेस्ट बंगाल) के अवसर पर हाज़िर अंसार का एक दृश्य।

10-9-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला जलपाईगुड़ी (वेस्ट बंगाल) के स्टेज का एक दृश्य ।

10-9-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला भागलपुर, मुंगेर, बांका (बिहार) के अवसर पर हाज़िर अंसार।

17-9-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला मोरेना (मध्य प्रदेश) के अवसर पर तक़सीमे इनामात का एक दृश्य ।

10-9-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला जयपुर (राजस्थान) के अवसर पर हाज़िर अंसार।

10-9-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला कन्नूर, कासरगोड (केरला) के अवसर पर हाज़िर अंसार का एक दृश्य ।

30-7-2023 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह बरहपुरा (ज़िला भागलपुर) बिहार के अवसर पर हाज़िर अंसार ।

17-9-2023 को चंदापूर में आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला निज़ामाबाद (तेलंगाना) के अवसर पर हाज़िर अंसार ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 21 **अक्तूबर 2023** **Issue - 10**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)
डाक्टर अब्दुल माजिद
09915279005

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय : वास्तविक उद्देश्य सच्चा अनुसरण है	4
निवेदन - सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत ख़ुदा के मुक़र्रबीन	6
लेख : ताल्लुक बिल्लाह के वाकियात	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی یُدَبِّرُ الْاَمْرَ یُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ (الرعد3)

अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना ऐसे स्तंभों के ऊंचा किया जिन्हें तुम देखते हो। फिर वह अर्श पर स्थिर हुआ और सूर्य एवं चंद्रमा को सेवा पर लगा दिया। प्रत्येक वस्तु एक निश्चित अवधि तक के लिए गतिशील है। वह प्रत्येक काम को योजनापूर्वक करता है (और) अपने चिन्हों को खोल खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम अपने रब्ब से मिलने का विश्वास करो।

दर्सुल हदीस

عنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا اَوْ اَزِیْدُ، وَمَنْ جَآءَ بِالسَّیِّئَةِ فَجَزَآءُ سَیِّئَةٍ مِثْلُهَا اَوْ اَغْفِرُ۔ وَمَنْ تَقَرَّبَ مِنِّیْ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا، وَمَنْ تَقَرَّبَ مِنِّیْ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ بَاعًا، وَمَنْ اَتَانِیْ یَمْشِیْ اَتَیْتُهٗ هَرْوَلَةً وَمَنْ لَقِیَنِیْ بِقُرَابِ الْاَرْضِ خَطِیْئَةً لَا یُشْرِكُ بِیْ شَیْئًا لَقِیْتُهٗ بِمِثْلِهَا مَغْفِرَةً۔ (مسلم کتاب الذکر باب فضل الذکر والدعآء)

अनुवाद - हज़रत अबू ज़र[रज़ि] वर्णन करते हैं कि एक बार पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह फरमाता है: जो कोई नेकी करता है उसे दस गुना या उससे भी अधिक सवाब दूंगा।" और यदि वह बुराई करे, तो मैं उसे उस बुराई के अनुसार दण्ड दूँगा या उसे क्षमा कर दूँगा। और जो मुझसे एक बालिश्त दूर होता है, मैं उससे एक गज़ करीब होता हूँ, और जो मुझसे एक गज़ दूर है, मैं उससे दो गज़ करीब होता हूँ। और जो कोई मेरे पास चलकर आता है, मैं उसके पास दौड़ा चला आता हूं, और यदि कोई मनुष्य सारे संसार के पाप लेकर मेरे पास आए, बशर्ते कि उस ने किसी को मेरे बराबर न किया हो, तो मैं उसके साथ उतनी ही बड़ी क्षमा और बख़्शिश के साथ पेश आऊँगा और उसे माफ कर दूंगा।

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

पवित्र क़ुरआन उस शिक्षा को प्रस्तुत करता है जिसके माध्यम से और जिस पर चलने से इसी दुनिया में ख़ुदा के दर्शन प्राप्त हो सकते हैं। जैसा कि वह फरमाता है :-

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا (अल कहफ़-111)

अर्थात् जो व्यक्ति चाहता है कि इसी संसार में ख़ुदा का दर्शन प्राप्त हो जाए जो सच्चा ख़ुदा और स्रष्टा है तो चाहिए कि वह ऐसे शुभ कर्म करे जिन में किसी प्रकार की ख़राबी न हो। अर्थात् उसके कर्म न लोगों को दिखाने के लिए हों, न उनके कारण हृदय में अंहकार पैदा हो कि मैं ऐसा हूं और ऐसा हूं और न वह कर्म अधूरा और अपूर्ण हो और न उन में कोई ऐसी दुर्गन्ध हो जो व्यक्तिगत प्रेम के विरुद्ध हो अपितु चाहिए कि सच्चाई और वफ़ादारी से भरे हुए हों और साथ उसके यह भी चाहिए कि प्रत्येक प्रकार के शिर्क से बचाव हो। न सूर्य, न चन्द्रमा, न आकाश के सितारे, न वायु, न अग्नि, न पानी, न पृथ्वी की अन्य वस्तु उपास्य (मा'बूद) ठहराई जाए और न संसार के सामान को ऐसा सम्मान दिया जाए और उन पर ऐसा भरोसा किया जाए कि जैसे वे ख़ुदा के भागीदार हैं और न अपनी हिम्मत और प्रयास को कुछ चीज़ समझा जाए कि यह भी शिर्क के प्रकारों में से एक प्रकार है। अपितु सब कुछ करके यह समझा जाए कि हमने कुछ नहीं किया और न अपने ज्ञान पर कोई अभिमान किया जाए और न अपने अमल (कर्म) पर गर्व। अपितु स्वयं को वास्तव में अनाड़ी समझें और आलसी समझें तथा ख़ुदा तआला की चौखट पर हर समय रूह गिरी रहे और दुआओं के साथ उस के वरदान को अपनी ओर खींचा जाए और उस व्यक्ति की तरह हो जाएं जो बहुत प्यासा और असहाय भी है और उसके सामने एक झरना प्रकट हुआ है अत्यन्त शुद्ध और मधुर। अतः उसने गिरते-पड़ते बहरहाल स्वयं को उस झरने तक पहुँचा दिया और अपने होठों को उस झरने पर रख दिया और पृथक न हुआ जब तक तृप्त न हुआ।

★ ★ ★

सम्पादकीय

"वास्तविक उद्देश्य सच्चा अनुसरण है"

अल्लाह तआला की कृपा से हिंदुस्तान के दूर दराज़ क्षेत्रों से जमाअत के लोग वर्ष में विभिन्न अवसरों पर क़ादियान दारुल अमान ज़ियारत करते रहते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हिन्दोस्तान के तूल वारज़ से अहबाब जमात साल में मुख़्तलिफ़ औक़ात में कादियान दार उल-अमान ज़यारत करते रहते हैं। मुल्की सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह के मौक़ा पर भी अंसार भाईयों को क़ादियान तशरीफ़ लाने की तौफ़ीक़ मिलती है। कादियान इमामुज़्ज़मा हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मौलिद, मस्कन और मदफ़न होने की वजह से एक मुक़द्दस मुक़ाम है। यहां मौजूद मुक़ामात-ए-मुक़द्दसा की ज़यारत करना सवाब का बाइस है। अल्लाह तआला कुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है:

وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ (अलहज्ज-33)

यानी और जो कोई शाइर अल्लाह को अज़मत देगा तो यक़ीनन ये बात दलों के तक़्वा की अलामत है ।

ऐसे अवसरों पर इस बात को याद रखना चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीमात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत का अनुसरण और हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के आदेशों पर अमल करना निहायत ज़रूरी है। वर्ना सिर्फ मुक़ामात मुक़द्दसा या अंबिया व औलिया की ज़यारत से कोई फ़ायदा न होगा। एक बैअत करने वाले शख़्स को नसीहत करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"देखो आपने मेरी बैअत की। जो शख़्स बैअत में दाख़िल होता है इस के लिए ज़रूरी है कि वह इन उद्देश्यों को दृष्टिगत रखे जो बैअत से हैं। यह बातें कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़यारत हो जाए। असल उद्देश्य से दूर हैं। इन्सान का असल मंशा यह हरगिज़ नहीं होना चाहिए क़ुरआन शरीफ़ में भी यह असल मक़सद नहीं रखा गया, फ़रमाया: قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (आल-ए-इमरान-32)

असल ग़रज़ रसूल सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम का सच्चा अनुसरण है। जब इन्सान आपके अनुसरण में खोया जाता है, तो ऐसा भी हो जाता है। साथ ही ज़यारत भी हो जाए। जैसे कोई मेज़बान किसी की दावत करता है, तो वो उस के लिए उम्दा खाने लाता है, लेकिन इन खानों के साथ वो एक दस्तर-ख़्वान भी ले आता है। हाथ भी धुलाए जाते हैं, हालाँकि असल मक़सद तो खाना होता है। इसी तरह पर जो शख़्स रसूल सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम का सच्चा अनुसरण करता है। वो इस को अपना मक़सद ठहराता है। इस के साथ आपकी ज़यारत का हो जाना भी किसी वक़्त मुम्किन है। देखो बहुत से लोग यहां जो बैअत करने के लिए आते हैं वो मुझे देखते हैं। लेकिन अगर उनमें वो तबदीली जो मेरी असल ग़रज़ है और जिस के लिए मैं भेजा गया हूँ, नहीं होती तो मेरे देखने से उन को क्या फ़ायदा हुआ।

इस तरह ख़ुदा तआला के नज़दीक वो शख़्स बड़ा ही बद-बख़्त है और इस की कुछ भी क़दर अल्लाह तआला के हुज़ूर नहीं जिसने गो सारे अंबिया अलैहिमुस्सलाम की ज़यारत की हो, मगर वो सच्चा इख़लास वफ़ादारी और ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान ख़शीयत और तक़्वा उस के दिल में न हो। पस याद रखो निरी ज़यारतों से कुछ नहीं होता। ख़ुदा तआला ने जो पहली दुआ सिखलाई है। اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (अलफातिहा) अगर तआला का अस्ल मक़्सूद ज़यारत होता तो वो اِهْدِنَا की जगह اَرِنَا صُوَرَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ दुआ की तालीम फ़रमाता। जो नहीं किया गया। रसूल सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम की अमली ज़िंदगी में देख लो कि आप ने कभी ये ख़ाहिश नहीं की कि मुझे इबराहीम अलैहिस्सलाम की

ज़यारत हो जाए। गो आपको मेराज में सबकी ज़यारत भी हो गई। पस ये अमर मक़्सूदबिज़्ज़ात हरगिज़ नहीं होना चाहिए। असल मक़सद सच्ची इत्तिबा है।"(मलफ़ूज़ात जिल्द 2 सफ़ा 238 ता 239)

नीज़ आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मुझसे ख़ुदा तआला बातें करता है और मुझसे ही नहीं जो शख़्स मेरा अनुसरण करेगा और मेरे नक़श-ए-क़दम पर चलेगा और मेरी तालीम को मानेगा और मेरी हिदायत को क़बूल करेगा ख़ुदा तआला इस से भी बातें करेगा। (ज़रूरतुल इमाम, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 13 सफ़ा 475)

ख़ाली उम्मीद है फ़ुज़ूल सई अमल भी चाहिए
हाथ भी तो हिलाए जा, आस को भी बढ़ाए जा

(कलाम-ए-महमूद)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस् अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस तरफ़ तवज्जा दिला रहे हैं। अल्लाह तआला हमें सच्चे अनुसरण की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

ख़ुदा के मुक़र्रबीन

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

जो लोग ईमान के साथ ख़ुदा तआला की रज़ा के मुताबिक़ आमाल-ए-सालिहा बजा लाते हैं, मख़लूक़ की हमदर्दी करते हैं और उस की राह में इस्तिक़ामत दिखाते हैं, वो ख़ुदा के मुक़र्रबीन में शामिल होते हैं। ख़ुदा तआला भी उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है। एक जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (अलाहक़ाफ़13)

यानी यक़ीनन वे लोग जिन्हों ने कहा अल्लाह हमारा रब है फिर (इस पर) इस्तिक़ामत इख़तियार की तो न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वे दुखी होंगे।

एक दफ़ा रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुछ क़ैदी लाए गए जिनमें एक औरत भी थी जब वो क़ैदियों में किसी बच्चा को देखती तो उसे उठाती अपने सीने से लगाती और फिर उसे दूध पिलाती। यहां तक कि इस का अपना बच्चा उसे मिल गया और वह उसे गोद में लेकर इतमीनान के साथ बैठ गई। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस औरत को देखा और फिर सहाबा से फ़रमाया कि अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम करना बहुत बड़ा अमल है। तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर कोई शख़्स इस से कहे कि अपने बच्चा को आग में फेंक दे तो क्या यह उसे फेंक देगी? सहाबा ने अर्ज़ किया ख़ुदा की क़सम अगर उस का बस चले तो वो कभी अपने बच्चा को आग में नहीं फेंकेगी। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुमने जो इस औरत की मुहब्बत का नज़ारा देखा है अल्लाह तआला इस से भी ज़्यादा अपने बंदों से मुहब्बत रखता है। माँ से तो दस आदमी मिलकर उस का बच्चा छीन सकते हैं मगर वो कौन माँ का बच्चा है जो ख़ुदा की गोद से किसी को छीन सके। इसलिए ख़ुदा की मुहब्बत ज़्यादा शानदार और ज़्यादा पायदार और ज़्यादा असर रखने वाली है। (मुस्लिम किताबुत्तौबा बाब फ़ी साअता)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मुताल्लिक़ मंजूम कलाम में फ़रमाते हैं:

इबतिदा से तेरे ही साया में मेरे दिन कटे
गोद में तेरी रहा मैं मिसल-ए-तिफ़्ल-ए-शीर ख़ार

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं:

"तज़किरतुल औलिया में लिखा है कि कोई बुज़ुर्ग थे जिनके हमसाया में कोई अमीर शख़्स

रहता था जो रात-दिन नाच-गाने की मजालिस गर्म रखता था और हरवक़त शूरू ग़ौग़ा होता रहता था चूँकि इस तरह उस की इबादत में ख़लल वाक़िया होता था एक दिन उन्होंने उसे समझाया और कहा कि तुम रात को बाजे बजाते और ऊंचा ऊंचा गाते हो इस तरह मेरी इबादत में ख़लल आता है मुनासिब ये है कि तुम इस किस्म की मज्लिसों को बंद कर दो। वो अमीर आदमी बादशाह का मुसाहिब था उसे ये बात बुरी लगी और उसने बादशाह के पास शिकायत कर दी कि इस तरह कुछ लोग हमारे गाने बजाने में रोक डालते हैं। बादशाह ने फ़ौज का एक दस्ता उस के मकान पर भिजवा दिया। जब शाही फ़ौज आ गई तो उसने इस बुज़ुर्ग को कहला भिजवाया कि मेरी हिफ़ाज़त के लिए फ़ौज आ गई है अगर ताक़त है तो मुक़ाबला कर लो। इस बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि इन सामानों से तो मुक़ाबला की मुझमें ताक़त नहीं लेकिन लड़ाई हमने भी नहीं छोड़नी। अगर हम तीरों से तुम्हारा मुक़ाबला करें तो नामालूम हमारा तीर निशाना पर पड़े या न पड़े इसलिए ज़ाहिरी तीर और तलवार की बजाय हम रात के तीरों से तुम्हारा मुक़ाबला करेंगे। जब ये पैग़ाम उसे पहुंचा तो मालूम होता है इस के अंदर थोड़ी बहुत नेकी थी पहले तो वो ख़ामोश रहा लेकिन कुछ देर ख़ामोश रहने के बाद उस की चीख़ निकल गई और उसने कहा मुझे माफ़ किया जाये आज से बाजा, गाना सब बंद हो जाएगा क्योंकि रात के तीरों के मुक़ाबला की ना मुझमें ताक़त है और ना मेरे बादशाह में ताक़त है। तो हक़ीक़त ये है कि ख़ुदा तआला का मिलना और इस से इन्सान का ताल्लुक़ पैदा हो जाना ये सबसे अहम और ज़रूरी चीज़ है और अगर ख़ुदा मिल सकता है तो फिर इस में कोई शुबा ही नहीं रहता कि हमारा सबसे बड़ा फ़र्ज़ यही रह जाता है कि इस के साथ ताल्लुक़ पैदा करें और इस तरह अपनी ज़िंदगी के मक़सद को हासिल कर लें।"(अनवारुल उलूम जिल्द 23 सफ़ा 125-126)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें भी अपने मुक़र्रबीन में शामिल फ़रमाए। आमीन

(अताउल मुजीब लोन)

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

ताल्लुक बिल्लाह के वाकियात
(अल्लाह तआला के साथ संबंध स्थापित करने की घटनाएँ)

एच. शमसुद्दीन
(काएद तरबियत मज्लिस अंसारुल्लाह)

अल्लाह से रिश्ता या उस से निकटता हमेशा से इस्लाम की पहचान रही है। या आप कह सकते हैं कि ख़ुदा से रिश्ता ही इस्लाम का सार है। और आज दुनिया में इस्लाम ही एकमात्र ऐसा धर्म है जो इंसान को यह संदेश दे रहा है: يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ अर्थात हे इंसान! तू पूरी शक्ति से अपने रब्ब की ओर जाने वाला है (और) फिर वह उससे मिलने वाला है।

क्योंकि अल्लाह तआला ने अपनी प्रभुता का एहसास मानव स्वभाव में ही रख दिया है। जैसा कि फरमाया: اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛ मैं तुम्हारा ख़ुदा नहीं हूं। उन्होंने गवाही दी कि हां, क्यों नहीं! और समय-समय पर लोगों को अल्लाह के साथ संबंध के बारे में सिखाने के लिए, अल्लाह सर्वशक्तिमान ने हर राष्ट्र और हर क्षेत्र में नबियों और रसूलों को भेजा, जिनकी संख्या एक लाख चौबीस हज़ार बताई गई है। लेकिन हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआला से निराला और अनोखा संबंध कुछ इस प्रकार से है कि

मुहम्मद अरबी बादशाह हर दो सिरा
करे है रूह क़ुदस जिसके दर की दरबानी
उसे ख़ुदा तो नहीं कह सिक्कों पे कहता हूँ
इस की मर्तबादानी में है ख़ुदा दानी

(चश्मा-ए-मारीफ़त/रूहानी खज़ाइन खंड 23 पृष्ठ 302 से उद्धृत)

अत: नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के पूर्ण मार्ग के बारे में अपने व्यावहारिक उदाहरण से मुस्लिम उम्मा का मार्गदर्शन किया है। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने भी अपनी ओर से घोषणा की: قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ "अर्थात उन को कह दो कि यदि तुम चाहते हो कि अल्लाह के प्रिय बन जाओ तो मेरी बात मानो अल्लाह तआला तुम से मोहब्बत करेगा। (आले इमरान: 32) (मल्फ़ूज़ात खण्ड 2 पृष्ठ 40 से अनुवाद)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन अल्लाह के आकर्षक उदाहरणों से भरा है। यह सच है कि जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ख़ुदा की इबादत में लीन होते तो बस فَلَا تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُوْلِهِنَّ अर्थात आपकी इबादतों की सुंदरता और लंबाई के बारे में न पूछिए। (बुखारी किताबुस्सौम, अध्याय फ़ज़ल मन कामा रमज़ान)

जैसा कि अल्लाह तआला ने खुद से घोषणा की: قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ मानो आप की हर सांस रब्बुल आलमीन के लिए थी। इस संबंध में एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी प्राच्यवादी लेखक कहते हैं:

"हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कुछ भी कहें...लेकिन हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि उनमें ख़ुदा के नाम के प्रति गहरी लगन थी। हम और कुछ भी कहें, हम यह नहीं कह सकते कि उनका ख़ुदा से कोई संबंध नहीं था। वह जो कुछ भी करते और जिस भी स्थिति में दिखाई देते, ख़ुदा का नाम हमेशा उनकी ज़बान पर रहता। यदि वह खाना खाता है तो ख़ुदा का नाम लेता है, कपड़े पहनता है तो ख़ुदा का नाम लेता है, शौच करता है तो ख़ुदा का नाम लेता है, शौच से मुक्ति पाता है तो ख़ुदा का नाम लेता है, शादी करता है तो ख़ुदा का नाम लेता है, दु:ख में होता तो ख़ुदा का नाम लेता है। कोई पैदा होता तो ख़ुदा का नाम लेता, कोई मर जाता तो ख़ुदा का नाम लेता, उठता तो ख़ुदा का नाम लेता, बैठता तो ख़ुदा का नाम लेता, जब वह सोने जाता तो ख़ुदा का नाम लेता, जब उठता तो ख़ुदा का नाम लेता, जब सुबह होती तो ख़ुदा का नाम लेता, जब शाम होती तो ख़ुदा का नाम लेता। हालाँकि, मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ भी कहो, लेकिन वह अल्लाह के शब्द का उसको ज़रूर जुनून था। (खुत्बात महमूद, खंड 6/6 दिसंबर, 1918 से उद्धृत)

मेरे आक़ा के बारे में क्या अरब क्या ग़ैर अजम सब गवाह हैं عَشِقَ مُحَمَّدٌ عَلٰی رَبِّہٖ अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने रब्ब से प्रेम हो गया।

(मलफ़ूज़ात, खंड 6, पृष्ठ1984 273 संस्करण, इंग्लैंड में प्रकाशित)

तेरा नबी जो आया उसने ख़ुदा दिखाया
इस ने ख़ुदा मिलाया वो यार से पाया

इतिहास गवाह है कि जब भी इस अल्लाह के आशिक की ज़बान पर 'अल्लाह' का नाम आया, तो ऐसी शान के साथ आया कि दुश्मन भी उसकी शान से हैरान हुए बिना नहीं रह सका। युद्ध से लौटने पर वह अकेला सो रहा था, तभी एक शत्रु ने उस पर तलवार तान दी और पूछा, "तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?" उन्होंने कहा, "अल्लाह"। 'अल्लाह' शब्द ने इस दुश्मन की जान पर ऐसा प्रहार किया कि उसके हाथ से तलवार गिर गई! (साहिह बुखारी, किताब अल-मगाज़ी, अध्याय ग़ज़वाह, ज़ातुर्रिका से व्युत्पन्न)

नक़्श पा पर जो मुहम्मद के चलेगा इक दिन
पेरवी से उसकी महबूब-ए-खुदा हो जाएगा

आज के युग में, पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्मी दास, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुनिया को ख़ुदा के साथ नए रिश्ते की वास्तविकता से अवगत कराया।

आप फरमाते हैं:

"सर्वशक्तिमान ख़ुदा यह जानता है और वह हर मामले में सबसे अच्छा गवाह है कि... मैं एक समय जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूं।" लेकिन मुझे अपने जीवन के किसी भी हिस्से में सर्वशक्तिमान ख़ुदा के अलावा किसी के साथ अपना वास्तविक रिश्ता नहीं मिला।

इस संबंध में आप फरमाते हैं:

"मैंने कभी भी बहुत बड़ी तपस्या नहीं की है, और मैंने वर्तमान समय के कुछ सूफियों की तरह अपने आप को घोर संघर्ष में नहीं डाला और मैंने न कोई एकांत वास में रह कर कोई चिल्ला किया और मैंने कोई भी कार्य नहीं किया है सुन्नत के खिलाफ हो, जिस पर ख़ुदा के कलाम को एतराज़ हो। एक बूढ़ा व्यक्ति मुझे सपने में दिखाई दिया और उसने उल्लेख किया कि "आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाश की प्राप्ति के लिए कुछ रोज़े रखना ख़ानदान-ए-नुबुव्वत की एक सुन्नत है"। यह बताया गया कि मुझे अहल-ए-बैत रसूल की इस सुन्नत को करना चाहिए। तो कुछ समय तक मुझे लगा कि रोज़े रखना ही उचित है... इसलिए मैंने ये तरीका अपनाया। (किताबुल बरिय्याह: रूहानी खज़ाइन: खंड -13 पृष्ठ 196 195 फुटनोट)

अहमदीयत का इतिहास गवाह है कि दुनिया भर में इस्लाम अहमदीयत को स्थापित करने का सौभाग्य हमारे युवा मिशनरियों के सिर पर है। जो लोग अल्लाह से ताल्लुक रखते हैं, उनकी दिली दुआओं का फल अंधेरी रातों में अर्श मुअल्ला तक पहुंचता है और दुनिया में फिर يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا अल्लाह के दीन में लोगों की सेनाओं का अद्भुत और आकर्षक नज़ारा कई बार प्रकट हुआ है। आइए! अब कुछ मिशनरी और बुज़ुर्गों के अल्लाह अल्लाह से ताल्लुक पर संक्षिप्त रूप से दृष्टि डालते हैं: हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान साथियों में से एक थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने आपको इस्लाम के मिशनरी के रूप में अमेरिका भेजा। आपका व्यक्तित्व और रूप अल्लाह से संबंध की ज्वलंत तस्वीर थी। एक बार आप शिकागो के बाज़ार से गुज़र रहे थे तभी एक इमारत से एक लड़की की आवाज़ आई। उसने अपनी माँ को संबोधित किया और बहुत खुशी से रोने लगी: Look! look! Mother, Jesus Christ has come! अर्थात माँ! देखो, देखो यसू मसीह आ गए हैं! पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इन रब्बानी उलमा के बारे में क्या खूब कहा है कि मेरी क़ौम के आलिम बनी इस्राईल के पैगम्बरों जैसे हैं। इसी तरह हज़रत चौधरी सर मुहम्मद जफ़रुल्लाह खान साहब से जुड़ा एक किस्सा सुनिए! एक बार एक युवक ने बातचीत के दौरान हज़रत चौधरी साहब से कहा कि यूरोप में फज्र की नमाज समय पर अदा करना बहुत मुश्किल है। इस पर हज़रत चौधरी साहब

ने अपना उदाहरण पेश करते हुए कहा कि यद्यपि मुझे अपना उदाहरण देन पसंद नहीं है, लेकिन आपकी तरबियत (प्रशिक्षण) के लिए, मैं कहता हूं कि ख़ुदा सर्वशक्तिमान की कृपा से यूरोप में लगभग आधी शताब्दी बिताने के बावजूद, मैंने कभी फज्र तो फज्र तहजुद की नमाज़ भी नहीं छोड़ी। यही हाल पाँच नमाज़ो का है। (पुस्तक सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह खान रज़ी॰)

आशिक़ी की है अलामत गिर्ये व दामान-ए-दश्त
किया मुबारक आँख जो तेरे लिए हो अशकबार

यहां तक कि गैर-मुस्लिम भी अहमदी उपदेशकों के अल्लाह से संबंध से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इस प्रकार, मौलाना अताउल्लाह कलीम साहब (पूर्व रईस अत्तब्लीग घाना) की जीवनी में लिखा है कि एक दिन उन्हें घाना के राष्ट्रपति ने अपने कार्यालय में बुला कर कहा: मैंने आपको बुलाया है क्योंकि मेरे खिलाफ कुछ षड्यंत्र और साजिशें चल रही हैं, कृपया मेरे लिए प्रार्थना करें और मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए अहमदिया जमात के सर्वोच्च प्रमुख को भी लिखें। (सर गश्त-ए-कलीम से/पृ. 93) इसी तरह, मौलाना बशीर अहमद साहब, एक दोस्त और फ़ज़ल मस्जिद, लंदन के पूर्व इमाम, लिखते हैं: अकरा में हवाई अड्डे पर, हम...सीधे कस्टम हॉल में गए...वहां एक सुंदर कस्टम अधिकारी खड़ा था। उन्होंने मेरा पासपोर्ट देखा जिस पर मिशनरी लिखा था। उन्होंने मुझसे पूछा: क्या आप अहमदिया मिशनरी हैं? मैंने हाँ में उत्तर दिया। वह मुझे एक अलग कमरे में ले गया। मुझे कुछ परेशानी हुई। कमरे में जाकर उन्होंने कहा: मुझे अहमदी उपदेशकों की प्रार्थना स्वीकार होने पर पूरा भरोसा है। मैं स्वयं एक ईसाई हूं, लेकिन मैंने कई लोगों से अहमदियों द्वारा प्रार्थना स्वीकार किए जाने के बारे में सुना है। मुझे बच्चे नहीं है। शादी को कई साल हो गए हैं। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप मुझे मेरे पिता बनने के लिए दुआ देने का वादा करें। मुझे उसकी हालत पर तरस आया और मैंने उससे वादा किया कि मैं दर्द के साथ उसके लिए प्रार्थना जरूर करूंगा। (चंद गोशवार यादें से उद्धृत)

निशाँ साथ हैं इतने कि कुछ शुमार नहीं
हमारे दीन का क़िस्सों पे ही मदार नहीं

इतिहास गवाह है कि लश्कर-ए-उसामा प्रार्थना और आज्ञाकारिता में उनका उदाहरण था, और उन्हें ख़ुदा के साथ संबंध बनाने की सलाह देते हुए, अल्लाह सर्वशक्तिमान कहते हैं: وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ (अल-अलक 20) अर्थात सज्दे में गिर जा और सानिध्य प्राप्त करने का प्रयास कर। पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम ने भी ख़ुदा के सामने सज्दा करने को बहुत महत्व दिया। और आप ने फरमाया: أَقْرَبُ مَا يَكُوْنُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهٖ-عَزَّوَجَلَّ- وَهُوَ سَاجِدٌ فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ और वह सजदा कर रहा है, इसलिए खूब दुआएं करें (मुस्लिम किताबूस्सलात), यानी इंसान अपने रब के सबसे करीब उस वक्त होता है जब वह सजदे में होता है। इसलिए सजदे में खूब इबादत करो। एक अन्य अवसर पर फरमाया- فَأَعِنِّيْ عَلٰى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُوْدِ। अर्थात अपने ऊपर सज्दों की संख्या को बढ़ा कर मेरी सहायता करो।

नमाज़ के सज्दे के अलावा कुरान में सज्दे का शब्द आज्ञाकारिता के लिए भी आया है। और पवित्र क़ुरआन ने इसे फ़रिश्तों के सज्दे के रूप में वर्णित किया है। वर्तमान युग में चाहे वह प्रार्थना हो या आज्ञाकारिता, केवल एक सच्चे मोमिन से ही संभव है। यही कारण है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: تَكُوْنَ السَّجْدَةُ الْوَاحِدَةُ خَيْرًا مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا " मसीह के अवतरण के समय, एक सज्दा संसार और उसकी सारी नेमतों से भी अधिक मूल्यवान होगा।

अंत में सय्यदुना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का एक इक़्तेबास पेश है :

प्रत्येक अहमदी को सर्वशक्तिमान ख़ुदा के और करीब बढ़ने की ज़रूरत है। अत: दुनिया को पीछे धकेलो। सर्वशक्तिमान ख़ुदा के करीब बढ़ते रहें और हमें बढ़ते रहने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम इन दृश्यों को जल्द से जल्द देख सकें। आम तौर पर दुनिया के अहमदियों को भी इस पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है ताकि दुनिया में शैतान का शासन जल्द ही खत्म हो और दुनिया में अल्लाह तआला के करीबियों का शासन स्थापित हो। अल्लाह हमें ये दुआएं करने की तौफीक दे और हमें उन लोगों में शामिल होने की तौफीक भी दे जो अल्लाह के करीब हैं।

★ ★ ★